अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : आठवीं- जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2024)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(i) मनुष्यिणी में जीव के भेद पाये जाते हैं-
(क) 202 (ख) 303
(ग) 101 (घ) 30 (क)

(ii) अनिन्द्रिय में जीव के भेद पाये जाते हैं-
(क) 30 (ख) 15
(ग) 45 (घ) 101 (ख)

(iii) त्रसकाय में जीव के कुल भेद पाये जाते हैं-
(क) 303 (ख) 48
(ग) 541 (घ) 563 (ग)

(iv) तीन दृष्टि में जीव के भेद पाये जाते हैं-
(क) 170 (ख) 280
(ग) 290 (घ) 103 (घ)

(v) अवधिज्ञानी में जीव के भेद पाये जाते हैं-
(क) 210 (ख) 15
(ग) 283 (घ) 222 (क)

(vi) मनुष्यिणी में योग पाये जाते हैं-
(क) 15 (ख) 13
(ग) 10 (घ) 11 (ख)

(vii) अवेदी में गुणस्थान पाये जाते हैं-
(क) 5 (ख) 4
(ग) 6 (घ) 2 (ग)

(viii) सास्वादन समकित में जीव के भेद पाये जाते हैं-
(क) 2 (ख) 1
(ग) 3 (घ) 6 (घ)

(ix) यथाख्यात संयत में उपयोग पाये जाते हैं-
(क) 2 (ख) 7
(ग) 6 (घ) 9 (घ)

(x) नैरयिक जीव पुद्गलों का आहार करते हैं-
(क) सचित्त (ख) मिश्र
(ग) अचित्त (घ) तीनों (ग)

(xi) मनुष्य की आहारेच्छा का उत्कृष्ट काल हैं-
(क) प्रतिसमय (ख) तीन दिन
(ग) अन्तर्मुहूर्त्त (घ) एक दिन (ख)

(xii) अप्रमादी संयत होते हैं-
(क) अनारम्भी (ख) आत्मारम्भी
(ग) परारम्भी (घ) तदुभयारम्भी (क)

(xiii) पारिणामिक भाव के भेद होते हैं-
(क) दो (ख) तीन
(ग) चार (घ) एक (ख)

(xiv) असिद्धत्व भाव का भेद है-
(क) पारिणामिक (ख) सान्निपातिक
(ग) औदयिक (घ) क्षायिक (ग)

(xv) चतुःसंयोगी सान्निपातिक भाव के भेद होते हैं-
(क) 10 (ख) 1
(ग) 26 (घ) 5 (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(i) नरकगति व देवगति में जीव के तीन भेद पाये जाते हैं। (हाँ)

(ii) वायुकाय में चार योग पाये जाते हैं। (नहीं)

(iii) क्षायिक समकित पाने के एक समय पूर्व की अवस्था वेदक समकित हैं। (हाँ)

(iv) मनः पर्याय ज्ञानी नियमा साधु होते हैं। (हाँ)

(v) समचतुरस्र संस्थान में जीव के 212 भेद होते हैं। (नहीं)

(vi) लवण समुद्र में जीव के 216 भेद पाये जाते हैं। (हाँ)

(vii) महाविदेह क्षेत्र में जीव के भेद 51 होते हैं। (नहीं)

(viii) एकान्त नील लेश्या में जीव के 2 भेद पाये जाते हैं। (हाँ)

(ix) परिहार विशुद्धि चारित्र में जीव के 15 भेद पाये जाते हैं। (नहीं)

(x) चार अनुत्तर विमान की आहरेच्छा का उत्कृष्ट काल 33 हजार वर्ष है। (हाँ)

(xi) जो न स्वयं पाप करता है, न दूसरों से करवाता है, उसे आत्मारंभी कहते हैं। (नहीं)

(xii) सिद्ध भगवान अनारंभी हैं। (हाँ)

(xiii) कर्मों के उदय से होने वाले भाव को औदयिक भाव कहते हैं। (हाँ)

(xiv) क्षायिक भाव के 18 भेद होते हैं। (नहीं)

(xv) बारहवें गुणस्थान में चार भाव पाये जाते हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए:- 15x1 = (15)

(i)	ऊँचा लोक में जीव के भेद	(क) 9	122
(ii)	परमाधार्मिक देव	(ख) 1	अम्ब
(iii)	लोकान्तिक देव	(ग) लोमाहारी	अरिष्ट
(iv)	अमर में जीव के भेद	(घ) सिद्ध	192
(v)	सम्यदृष्टि में जीव के भेद 14 में से	(च) अनारंभी	6
(vi)	अनाहारक में उपयोग	(छ) सादि सान्त	10
(vii)	देव में योग	(ज) 21	11
(viii)	अवेदी में उपयोग	(झ) सिद्धों में	9
(ix)	अचरम में गुणस्थान	(य) 11	1
(x)	नैरयिक	(र) 10	लोमाहारी
(xi)	असंसार समापन्नक	(ल) 6	सिद्ध
(xii)	शुभयोगी प्रमादी साधु	(व) 192	अनारंभी
(xiii)	औपशमिक भाव	(क्ष) अरिष्ट	सादि-सान्त
(xiv)	औदयिक भाव के भेद	(त्र) अम्ब	21
(xv)	द्विसंयोगी सान्निपातिक भाव	(ज्ञ) 122	सिद्धों में

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(i)	मैं एक भाषा हूँ मुझमें जीव के 220 भेद पाये जाते हैं।	व्यवहार भाषा
(ii)	मैं एक लेश्या हूँ मुझमें जीव के 66 भेद पाये जाते हैं।	पद्म लेश्या
(iii)	मैं एक दर्शन हूँ मुझमें जीव के 247 भेद पाये जाते हैं।	अवधि दर्शन
(iv)	मैं एक समुद्र हूँ मुझमें जीव के 46 भेद पाये जाते हैं।	कालोदधि
(v)	मैं एक गति हूँ मुझमें सिद्धों से भी अनंत गुणा जीव पाये जाते हैं।	तिर्यंच गति
(vi)	मैं एक समकित हूँ मुझमें केवल एक गुणस्थान पाया जाता है।	सास्वादन
(vii)	मैं एक संयत हूँ, मेरी संख्या सबसे थोड़ी (कम) है।	सूक्ष्म सम्पराय
(viii)	मेरे इन्द्रिय व मन होते हुए भी मैं अनिन्द्रिय कहलाता हूँ।	केवली
(ix)	मैं एक वेद हूँ मुझमें 13 योग पाये जाते हैं।	स्त्रीवेद
(x)	मैं देव हूँ मेरी उत्कृष्ट आहारेच्छा 31 हजार वर्ष है।	नौवा ग्रैवयक
(xi)	मैं दूसरे जीवों को पाप कार्य में प्रवृत्त कराने वाला हूँ।	परारंभी
(xii)	मैं एक प्रमादी संयत हूँ लेकिन अनारंभी हूँ।	शुभयोगी प्रमत्त संयत
(xiii)	मैं कर्मों के आत्यन्तिक क्षय से प्रवृत्त होने वाला भाव हूँ।	क्षायिक भाव
(xiv)	मैं एक भाव हूँ, मैं पहले से 12 गुणस्थान तक रहता हूँ।	क्षायोपशमिक
(xv)	मैं एक सान्निपातिक भाव हूँ, मेरा एक भेद है।	पंच संयोगी

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2 = (16)

(i) नो गर्भज में जीव के कितने भेद पाये जाते हैं, अलग-अलग लिखिए।

नो गर्भज में जीव के भेद-351 (14 नारकी के, 10 सन्नी तिर्यंच को छोड़कर 38 तिर्यंच के, 101 सम्मूर्च्छिम मनुष्य के और 198 देवता के)

(ii) सिद्ध शिला पर जीव के कितने भेद पाये जाते हैं, स्पष्ट कीजिए।

12 भेद- (10 सूक्ष्म और 2 बादर पृथ्वीकाय के)

(iii) एकान्त मिथ्यादृष्टि में मनुष्य के कितने व कौनसे भेद पाये जाते हैं ?

एकान्त मिथ्यादृष्टि में मनुष्य के 213 भेद, 101 सम्मूर्च्छिम मनुष्य के, 56 अन्तरद्वीपों के अपर्याप्त-पर्याप्त = 112 मनुष्य के =101+112 =213

(iv) आहारक द्वार का अल्पबहुत्व लिखिए।

सबसे थोड़े अनाहारक, उनसे आहारक असंख्यात गुण हैं।

(v) परीत किसे कहते हैं ?

नोटः-दोनों में से कोई एक परिभाषा मान्य

ऐसे शुक्लपक्षी जीव जिन्होंने एक बार भी सम्यग्दर्शन का प्राप्त कर लिया है, वे संसार परीत कहलाते हैं।

जिन जीवों ने अनन्तकाय को छोड़कर प्रत्येक काय को प्राप्त कर लिया है और जब तक वे प्रत्येक काय में हैं, तब तक वे काय परीत कहलाते हैं।

(vi) अनाकार उपयोग में कौन-कौन से गुणस्थान पाये जाते हैं ?

अनाकार उपयोग में दसवें गुणस्थान को छोड़कर शेष 13 गुणस्थान पाये जाते हैं।

(vii) अनाभोग निर्वर्तित आहार किसे कहते हैं ?

इच्छा बिना किया गया आहार अनाभोग निर्वर्तित आहार है।

(viii) सान्निपातिक भावों के कितने भेद जीव में संभव नहीं हैं ?

सान्निपातिक भावों के 26 भेद में से 20 भेद जीवों में संभव नहीं है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3 = (24)

(i) दर्शन मोहनीय एवं चारित्र मोहनीय के उपशम से उत्पन्न भाव कौन-2 से गुणस्थानों में पाये जाते हैं ?

दर्शन मोहनीय के उपशम से उत्पन्न भाव 4 से 11 गुणस्थान तक तथा चारित्र मोहनीय के पूर्ण उपशम से उत्पन्न भाव मात्र 11वें गुणस्थान में होता है।

(ii) कौनसी आठ कर्म प्रकृतियों का क्षयोपशम 1 से 12 गुणस्थान में नियम से रहता है ?

मतिज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, अचक्षुदर्शनावरण तथा अन्तराय कर्म की दानान्तराय आदि पाँच प्रकृतिया, ये 8 प्रकृतियों का क्षयोपशम 1 से 12 गुणस्थान में नियम से रहता है।

(iii) क्या छठे गुणस्थान वाले संयति आत्मारंभी, परारंभी या अनारंभी होते हैं ? समझाइए।

छठे गुणस्थान वाले प्रमादी साधु जो शुभ योगी हैं, वे अनारंभी हैं। किन्तु जो अशुभयोगी, अशुभलेश्यी हैं, वे आत्मारंभी परारंभी तथा तदुभयारंभी है।

(iv) लोम आहार एवं प्रक्षेपाहार किसे कहते हैं ?

लोम आहार- शरीर पर्याप्ति होने के बाद रोमों (त्वचा) के द्वारा होने वाला आहार लोमाहार कहलाता है।

प्रक्षेपाहार- मुख से या नली आदि से इंजेक्शन आदि से शरीर में आहार डालना, ग्लूकोज आदि चढ़ाना प्रक्षेपाहार (कवलाहार) कहलाता है।

(v) वेदक समकिती में जीव के भेद, गुणस्थान, योग, उपयोग तथा लेश्या लिखिए।

जीव के भेद	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
2	4	11	7	6

(vi) वेद द्वार का अल्प बहुत्व लिखिए।

सबसे थोड़े पुरुषवेदी, उनसे स्त्रीवेदी संख्यात गुणा, उनसे अवेदी अनन्त गुण, उनसे नपुंसकवेदी अनन्त गुण और उनसे सवेदी विशेषाधिक हैं।

(vii) शाश्वत द्वार में शाश्वत एवं अशाश्वत से क्या तात्पर्य है ?

शाश्वत- विरह पड़ने पर भी जो जीव के भेद विद्यमान रहे, हमेशा मिले, वे शाश्वत कहलाते हैं।

अशाश्वत- जो कभी मिले, कभी न मिले वे जीव के भेद अशाश्वत कहलाते हैं।

(viii) एकान्त नपुंसक वेद में जीव के कौन-कौनसे भेद पाये जाते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

153 भेद- 14 नारकी, 38 तिर्यंच(10 सन्नी तिर्यंच को छोड़कर) और 101 सम्मूर्च्छिम मनुष्य के।